मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 56 अंक 01 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
जनवरी 2020 | बहाई वर्ष : 176

विश्व न्याय मन्दिर

प्रत्येक दिशा में हर स्तर पर प्रभुधर्म की उल्लेखनीय प्रगति हो रही है–बिल्कुल निचले स्तर पर विस्तार और सुगठन से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थागत विकास तक। बहाई समुदाय में बढ़ती एकजुटता के ये उत्साहित करने वाले संकेत उस समय सामने आये हैं, जब दुनिया भर में समाज के विघटन और पतन की घटनाएँ साफ़ नज़र आ रही हैं।

–रिजवा़न 2005

झारखण्ड में बहाई बाल कक्षा के औपचारीकरण से सम्बंधित भ्रमण

जमशेदपुर के बिरसानगर समुदाय में जोन–6 एवं कदमा समुदाय में ब्लॉक–4 में बहाई बाल कक्षा के औपचारीकरण से संबधित तीन दिवसीय भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमें विशेष रूप से हिन्दी पूर्व क्षेत्र दल के सदस्य उपस्थित हुए। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य स्थानीय शिक्षकों के साथ अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा प्राप्त बहाई बाल समूह के औपचारीकरण से संबंधित परिपत्र का अध्ययन करना एवं प्राप्त अनुभवों के आधार पर योजना तैयार करना था। दोनों समुदायसमूहों में अलग–अलग स्थानीय स्तर पर शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया था। कदमा समुदाय में 8 शिक्षक एवं बिरसानगर समुदाय में 11 शिक्षक उपस्थित हुए। इस बैठक में समुदाय में संचालित की जा रही बहाई बाल समूह के अनुभवों से परिचित होना, औपचारीकरण से संबंधित परिपत्र का अध्ययन करना एवं प्राप्त अंतर्दृष्टियों के आधार पर योजना तैयार करना था। औपचारीकरण परिपत्र के अध्ययन से शिक्षकों ने समुदाय का चयन, वास्तविकता को पढ़ना, आवश्यकताओं का मूल्यांकन, शिक्षा हेतु केंद्र की स्थापना, स्थानीय जनसमुदाय व नेताओं से वार्तालाप, बच्चों का पंजीकरण, शिक्षकों का चयन एवं प्रशिक्षण, शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ वार्तालाप एवं साथ देना, समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक पहलू पर गहनता से परामर्श किया। साथ ही, कुछ दिनों पहले अपने–अपने समुदाय में किये गये सर्वे की जानकारी भी प्रस्तुत की, जिसमें कदमा ब्लॉक–4 (बी) में कुल 115 घरों में से 78 घरों का भ्रमण किया गया और लगभग 600 में से 390 लोगों से मिला गया। बिरसानगर



झारखण्ड के कदमा में आयोजित अभिभावक बैठक

में दो गली के 230 घरों में कुल 1001 मित्रों की जानकारी प्राप्त की गयी। परिपत्र से प्राप्त अंतर्दृष्टियों के आधार पर शिक्षक के साथ कुछ योजना बनाई गयी कि कैसे जो घर बाकी हैं उसका जल्द से जल्द सर्वेक्षण हो। जो बच्चे कक्षा में नहीं आते हैं, उनके अभिभावक से वार्तालाप कर कक्षाओं में सम्मिलित करना, बच्चों का पंजीकरण, कुछ कक्षाओं को आयु के आधार पर वर्गीकरण करना, कैसे वहाँ शिक्षकों

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

भारत के राष्ट्रपति ने बाब की ऐतिहासिक द्विशताब्दी के प्रति सम्मान प्रकट किया

भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा ने नई दिल्ली स्थित बहाई भवन में 17 दिसम्बर, 2019 को बाब के जन्म की द्विशताब्दी के सिलसिले में एक बैठक का आयोजन किया, जिसे ऐतिहासिक बैठक कहा जा सकता है। भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री समाज के प्रतिनिधि, धार्मिक नेता, शिक्षाविद, कलाकार और बहाई समुदाय के सदस्य शामिल थे।

जब राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा की सचिव द्वारा आमंत्रित अतिथियों का परिचय कराया गया तो माननीय राष्ट्रपति ने सभी अतिथियों का अभिवादन किया।



भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद, भारत की प्रथम महिला श्रीमती सविता कोविंद, सुश्री स्वाति कोविंद और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यगण

राम नाथ कोविन्द ने इस अवसर पर भारत के बहाई समुदाय के बीच उपस्थित रहने की सहमति पहले ही दे दी थी।

माननीय राष्ट्रपति के साथ भारत की प्रथम महिला श्रीमती बैठक को सम्बोधित करते हुये राष्ट्रपति श्री कोविन्द ने कहा कि "पूरे देश में एक सक्रिय और जीवंत समुदाय के निर्माण में अन्य संस्थाओं के साथ–साथ भारत के बहाई समुदाय का भी बहुत बड़ा योगदान



माननीय राष्ट्रपति उपस्थित अतिथियों को सम्बोधित करते हुए

सविता कोविंद और उनकी बेटी स्वाति कोविंद भी थीं। साथ ही, उपस्थित एक सौ साठ से अधिक अतिथिगण थे। इनमें सरकारी पदाधिकारी, राजनयिक, सभ्य रहा है। इसमें ख़ासकर लड़के एवं लड़कियों की शिक्षा, सेवा–भाव से किये गये कार्य को आराधना के स्तर तक ले जाना और एक साथ

शेष पृष्ठ 3 पर

बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव का कार्यक्रम स्कूलों में आयोजित किया गया

• जयपुर के संजीवनी डिवाइन एकेडमी में बाब की द्विशताब्दी कार्यक्रम उत्सव आयोजित किया गया, जिसमें 150 से अधिक लोग शामिल हुए थे।

कार्यक्रम की शुरुआत विद्यार्थियों ने प्रार्थना के साथ की, जिसके बाद बहाई भजन पर नृत्य प्रस्तुत किया गया। उसके उपरान्त बाब, उनके जीवन और उनके रहस्योद्घाटन के बारे में 15 मिनट की फिल्म दिखाई गई। फिल्म के बाद स्कूल के निदेशक ने स्कूल के



जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुत करते बच्चे

बारे में बताया कि विद्यार्थियों के बीच बाब और बहाउल्लाह की शिक्षाओं के माध्यम से एक नई विश्व व्यवस्था लाने के लिए प्रयास किया जा रहा है। स्कूल के छात्रों से अपने अनुभव को साझा करने का अनुरोध किया गया कि कैसे वे



कल्याण में स्कूल के बच्चों को प्रमाणपत्र वितरित करते हुए

स्कूल में संस्थान की प्रक्रिया से गुजरते हैं और इसने उनके निजी जीवन को कैसे बदल दिया।

इस बिंदु पर सह–संस्थापक और सहायक मण्डल सदस्य ने स्कूल के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अभिभावकों से समर्थन और सहयोग की बात की। धर्मों की एकता पर एक लघुनाटिका भी प्रस्तुत की गई।

• स्थानीय आध्यात्मिक सभा कल्याण ने बाब की द्विशताब्दी के अवसर पर स्कूलों में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। निबंध का विषय था विश्व एकता। इस बारे में छात्रों को पहले ही समझाया गया था। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के दौरान विश्व एकता और विश्व एकता को प्राप्त करने के अपने मिशन को समझाया गया। इस आयोजन में स्कूल के मालिक, कर्मचारियों और छात्रों ने भाग लिया। सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। स्कूल के मालिकों ने रूही या किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के संचालन की अनुमति देने के लिए इसके साथ परिचित होने के लिए रुही पुस्तकों के सेट की एक प्रति साझा करने का अनुरोध किया है।

• अहमदनगर के बहाई समुदाय ने बाब के द्विशताब्दी जन्मोत्सव का कार्यक्रम बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का आरम्भ सस्वर प्रार्थनाओं के साथ हुआ। उसके उपरान्त बाब के जीवन के और उनके उद्देश्य के बारे में बताया गया। प्रकाश का अरुणोदय फिल्म भी दिखाई गई।

अहमदनगर के वर्ग़ा स्कूल और जूनियर कॉलेज और फीनिक्स



वर्ग़ा स्कूल के विद्यार्थी अनाथालय में बांटने वाले सामान के साथ

स्कूलों में भी बाब के जन्मोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उपस्थित मित्रों को बाब के बारे में बताया गया और उनकी प्रार्थनाओं तथा उद्धरणों से अवगत कराया गया। स्कूल के विद्यार्थियों ने अनाथालय का भ्रमण भी किया। अनाथालय और वृद्धाश्रम में रहने वाले लोगों की आवश्यकता के अनुसार उन्हें रोजमर्रा में काम आने वाला सामान भी दिया गया।

कोलकाता में किताब–ए–अक़दस पर कार्यशाला का आयोजन

राज्य बहाई परिषद पश्चिम बंगाल और स्थानीय आध्यात्मिक सभा कोलकाता ने संयुक्त रूप से परम पावन पुस्तक किताब–ए–अकदस के अध्ययन के लिए 30



किताब–ए–अक़दस पर आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागी

नवम्बर और एक दिसम्बर को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कोलकाता में किया। इस कार्यशाला में राज्य के विभिन्न हिस्सों से लगभग 50 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। अध्ययन बंगाली और हिंदी भाषाओं में आयोजित किया गया।

कार्यशाला में आये हुए प्रतिभागियों में से एक ने निम्नलिखित टिप्पणी की : हमने परम पावन पुस्तक किताब–ए–अकदस पर हुई चर्चाओं का बहुत आनंद लिया।

पूरा सत्र बहुत प्रेरणादायक था, अनेक महत्वपूर्ण विषयों और किताब–ए–अकदस के विधानों, विशेष रूप से बहाई विवाह, बहाई अंत्येष्टि क्रिया और राजनीति से दूर रहने के बारे में समुदाय को शिक्षित करने में सहायक रहा।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

विचार–गोष्ठी : शांति की संस्कृति का निर्माण

बाब और बहाउल्लाह के द्विशताब्दी समारोहों और संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन की 74वीं वर्षगांठ के अवसर पर शांति के माहौल को बनाने और उसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत के बहाइयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के जन–सम्पर्क कार्यालय द्वारा एक विचार–गोष्ठी का आयोजन बहाई उपासना मंदिर में किया गया। उद्देश्य था शांति की संस्कृति के निर्माण में धर्म के प्रभाव की खोज के अवसर की तलाश। इस विचार गोष्ठी के दौरान जिन विषयों पर संवाद किये गये वे थे आर्थिक न्याय, स्त्री–पुरुष की समानता और सुरुचि सम्पन्नता तथा शांति। शिक्षा, नागरिक संस्थाओं, कलाकारों एवं व्यवसायियों को मिलाकर कोई साठ लोग इस गोष्ठी में शामिल हुये।

उद्घाटन भाषण सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवेलपिंग सोसायटीज़ के प्रो. अशीस नैनडी ने दिया। प्रोफेसर शिव विश्वनाथन, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सायंस, सोसायटी एंड सस्टेनिबिलिटी के उपाध्यक्ष तथा कार्यकारी निदेशक ने विशेष सम्बोधन प्रस्तुत किया और विषय से परिचय कराया बहाई जन–सम्पर्क कार्यालय की निदेशिका ने।

21वीं शताब्दी की चुनौतियों पर वक्ताओं ने अपने–अपने विचार रखे और यह महसूस किया गया कि सम्भावनायें अनेक हैं और शांति की दिशा में आगे बढ़ने के जो संसाधन हैं उन्हें सशक्त करने की ज़रूरत है। विविधता से शक्ति पाकर हम इन सम्भावनाओं को वास्तविकता में बदल सकते हैं। इस विचार–गोष्ठी में प्रोफेसर अमिताभ कुंडु, श्री राजीव मेहरोत्रा, डा. सैय्यद हामिद, प्रो. बुलबुल धार जेम्स, डा. वासु मोहन, डा. रवि वर्मा, डा. अनुराधा कपूर, प्रो. अपूर्वानन्द और डा. अराश फ़ज़ली ने भी अपने–अपने विचार रखे।



विचार गोष्ठी में भाग लेने वाले मित्रगण

बहाई विश्व केन्द्र में सेवा के अवसर

जैसे–जैसे दुनिया के हर भाग में प्रभुधर्म के कार्य फैलते जा रहे हैं वैसे–वैसे बहाई विश्व केन्द्र की प्रभावशाली कार्यविधि का महत्व बढ़ता जा रहा है। प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र का वर्णन शोगी एफेंदी द्वारा कुछ इन शब्दों में किया गया है : विश्व केन्द्र "नई विश्व व्यवस्था की एजेंसियों की धुरी है," यह विविध देशों से आये अनुयायियों के निरन्तर प्रवाह से सम्बलित है, जो निःस्वार्थ भाव से सेवा की एक निश्चित अवधि के लिये आते हैं, जो अवधि भिन्न–भिन्न हुआ करती है। विश्व केन्द्र में स्टॉफ की ज़रूरत विभिन्न कामों के लिये होती है, जो उपलब्ध संसाधनों और बढ़ती हुई ज़रूरतों के आधार पर निर्भर करते हैं। किसी ख़ास समय में सुयोग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों की ज़रूरत होती है। तो किसी अन्य समय में सामान्य काम–काज के लिये ज़रूरत होती है। विश्व केन्द्र में सेवा की प्रकृति के कारण 12 महीने या अधिक समय के लिये यह ज़रूरत पड़ती है। इच्छुक व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिये।

सेवा देने के इच्छुक किसी भी मित्र को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाता है कि वह सीधे तौर पर अपना आवेदन https://bahai.bwc.org/service/ पर भेज कर कार्मिक विभाग से सम्पर्क करे।

भारत के राष्ट्रपति ने बाब की ऐतिहासिक द्विशताब्दी के प्रति सम्मान प्रकट किया

पृष्ठ 1 का शेष

आध्यात्मिक, सामाजिक एवं भौतिक प्रगति को बढ़ावा देना शामिल है।"

पूरी दुनिया में बहाई समुदाय के होने की चर्चा करते हुये राष्ट्रपति श्री कोविन्द ने कहा, "ये समुदाय मानवजाति की एकता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण अपनी पहचान बना रहे हैं और इस प्रकार "वसुधैव कुटुम्बकम्" की गौरवशाली भारतीय प्रत्येक भारतवासी के साथ मिलकर बाब के आदर्श को साकार करेंगे और स्वार्थविहीन तथा कर्तव्यनिष्ठ सेवा के लिये उठ खड़े होंगे तथा मानवजाति के कल्याण के समान और सामूहिक उद्देश्य के साथ काम करेंगे।"

भारत के बहाई समुदाय की ओर से ग्रीस के उस संगमरमर की एक पट्टिका माननीय राष्ट्रपति को भेंट की गई जिस संगमरमर का उपयोग नई दिल्ली के बहाई उपासना मंदिर के निर्माण में किया गया है।



माननीय राष्ट्रपति उपस्थित मित्रों से भेंट करते हुए

परम्परा को प्रतिध्वनित कर रहे हैं। सच भी यही है कि पूरी दुनिया एक परिवार है।"

"यह मेरी आशा है कि जो लोग यहाँ आज आये हैं वे सभी

कोष संवर्द्धन पर दो दिवसीय दृढ़ीकरण कार्यक्रम का आयोजन

बहाई भवन पटना में कोष संवर्द्धन पर एक दृढ़ीकरण कार्यक्रम 9 एवं 10 दिसम्बर, 2019 को आयोजित किया गया, जिसमें ख़गड़िया, बिहारशरीफ़, पटना, फतुहा, पुनपुन, हाजीपुर एवं शाहपुर पटोरी से कुल 18 मित्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की शुरूआत भक्तिमय वातावरण में प्रार्थना एवं निगूढ़ वचन के पाठ से की गई। तत्पश्चात परिषद कोषाध्यक्ष ने परिषद के बजट और उनके खर्चों तथा कोष के महत्व पर विशेषीकृत जानकारी मित्रों को दी। साथ ही, बहाई कोष पर तैयार की गईं सामग्रियों का अध्ययन किया गया।

ज्ञातव्य हो कि अध्ययनोपरांत उपस्थित मित्रों ने अपनी वचन पत्रिका भरकर राष्ट्रीय बहाई कोष में अपना योगदान देने का संकल्प लिया। साथ ही, अपने क्लस्टर में कोष संवर्द्धन कार्यशाला आयोजित करने तथा अधिकाधिक दान संग्रह करने की योजना बनाई। इस अवसर पर परिषद के अध्यक्ष, सचिव एवं कई सदस्यगण उपस्थित थे।



पटना में आयोजित कोष संवर्द्धन कार्यशाला के प्रतिभागी

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान

बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के विधानों का सिंहावलोकन और इनकी उपयुक्तता

चादर ओढ़ाना

ईश्वर ने यह आदेश दिया है कि मृतक को रेशम या सूत के पाँच चादरों में लपेटा जाये। जिनके साधन सीमित हैं उनके लिये दोनों में से किसी एक प्रकार की एक ही चादर पर्याप्त होगी।

(बहाउल्लाह, किताब–ए–अक़दस, अनुच्छेद 130)

प्रश्न : मृतक के शरीर पर चादर डालने के सम्बन्ध में, जिससे सम्बन्धित आदेश दिया गया है कि पाँच चादरें हों, क्या पाँच चादर वे परम्परागत कफन है जो एक–दूसरे पर ओढ़ाये जाते हैं ?

उत्तर – पाँच कपड़ों के प्रयोग के लिये कहा गया है।

(बहाउल्लाह, किताब–ए–अक़दस, अनुच्छेद, प्रश्न और उत्तर 56)

मृतक अनुयायी के शरीर पर चादर ओढ़ाने के सम्बन्ध में, जिसकी चर्चा किताब–ए–अक़दस के अनुच्छेद 130 में की गई है; पवित्र लेखों में कुछ ऐसा नहीं मिलता जो उस विधि को परिभाषित करे जिस विधि से चादर के पाँच टुकड़ों को लपेटा जाये अथवा चादर लपेटने के अन्य पहलुओं पर कोई चर्चा भी नहीं मिलती है, और वर्तमान समय में विश्व न्याय मंदिर इससे सम्बन्धित कोई नियम बनाना नहीं चाहता है।

(विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक अनुयायी को 15 अप्रैल 2015 को लिखे गये पत्र से)

आपके इस प्रश्न के सम्बन्ध में कि एक मृतक के शरीर पर चादरें डालने के पहले क्या उसे कपड़े पहनाये जायें अथवा नहीं, शोगी एफेंदी की ओर से एक अनुयायी को 2 अप्रैल 1955 को लिखे गये एक पत्र में कहा गया है : शरीर को भूमिगत करने से पहले की तैयारियों में शरीर को अच्छी तरह धोना और तब उस पर सूती अथवा सिल्क की चादरें डालना है।" विश्व केन्द्र स्थित शोध प्रभाग ने रिपोर्ट की है कि पवित्र लेखों के इस या अन्य अंश में यह कहा गया है कि "शरीर को धोने के बाद इसे चादरों से ढँक देना चाहिये और फिर भूमिगत कर देना चाहिये", अब तक कहीं इस बात का उल्लेख नहीं मिला है कि चादरें डालने के पहले शरीर को वस्त्र पहनाये जाने की अनुमति है अथवा इसका निषेध किया गया है। हालाँकि 'किताब–ए–अक़दस' में यह आदेश दिया गया है कि मष्तक अनुयायी के शरीर को चादरों में लपेट दिया जाये किन्तु बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के इस पहलू को कहीं विस्तार से विश्व न्याय मंदिर द्वारा नहीं बतलाया गया है और अनुयायी अपने विवेक से काम करने के लिये फिलहाल स्वतंत्र है। चादर में लपेटने से सम्बन्धित बहाई विधान को लागू करने के सम्बन्ध में आपके पूछे गये प्रश्न के संदर्भ में – पश्चिमी देशों के अनुयायियों के लिये फिलहाल चादर अथवा चादरों में शरीर को लपेटने की ज़रूरत नहीं है।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के 29 नवम्बर 2016 को लिखे गये एक पत्र से)

क्रमशः

झारखण्ड में बहाई बाल कक्षा के औपचारीकरण से सम्बंधित भ्रमण

पृष्ठ 1 का शेष

का दल तैयार करना, एक वार्षिक कैलेंडर तैयार करना (जिसमें कक्षाओं का शुभारंभ और समापन समारोह, बाल मेला, अभिभावक बैठक, शिक्षक बैठक, इत्यादि सम्मलित हो)।

इसके अतिरिक्त इन तीन दिनों में 7 प्रार्थना सभाओं का भ्रमण एवं शिक्षकों के ग्रेड–1 एवं 2 और अनुप्रेरक के किशोर दल का भ्रमण किया गया। कक्षाओं के भ्रमण के दौरान उनको कहानी सुनाना एवं खेल खेलने जैसी गतिविधियाँ भी की गयी थीं। इस अवसर पर एक सह–शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 14 सह–शिक्षक उपस्थित हुए। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य असम राज्य में हुई संस्थागत सम्मेलन से आने के बाद की गयी पहलों की समीक्षा करना एवं योजनाओं की उपलब्धियों पर चर्चा करना था।



झारखण्ड के बिरसानगर में आयोजित शिक्षक बैठक

इन तीन दिनों में शिक्षक बैठक के साथ–साथ दोनों समुदायों में अभिभावक बैठक का भी आयोजन किया गया था, जिसमें कदमा समुदाय में 10 अभिभावक एवं बिरसानगर समुदाय में 8 अभिभावक उपस्थित हुए। इस बैठक में अभिभावकों के साथ बच्चों में हो रहे परिवर्तनों, भक्तिमय जीवन, व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रार्थना के महत्व पर चर्चा की गयी।

सेवा का अवसर

दिल्ली के बहाई उपासंना मन्दिर में प्रतिदिन हजारों आगंतुकों को प्रभावी ढंग से प्रभुधर्म का शिक्षण देने और प्रसार करने में अनेक स्वयंसेवक अपना सराहनीय योगदान दे रहे हैं। इसी क्रम को जारी रखने के लिए उपासना मन्दिर में स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। जो मित्रगण एक से तीन महीने के लिए स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवायें देना चाहते हैं, वे कृपया bhowindia@ibnc.in पर संपर्क करें।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.01. 2020
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)